



पुर्णा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Sample copy-2020-21

Semester-2

विषय- हिन्दी

कक्षा- 7

पाठ- 11 रहीम के दोहे

*** शब्दार्थ**

कहि- कहते है

विपत्ति- मुसीबत

साँचे- सच्चा

जाल- मछल पकडने का जाल

मीनन- मछली

सरवर- तालाब

सुजान- सज्जन

थोथा-खाली

पाछिली- पीछले समय की

घाम -गर्मी

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1) जीवन में मित्रों की अधिकता कब होती है?

उत्तर- जब जीवन में काफ़ी धन-दौलत, मान-सम्मान बढ़ जाता है तो मित्रों और शुभचिंतकों की संख्या बढ़ जाती है।

2) 'जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता' इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर- जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। इसका यह प्रमाण है कि मछलियों के जाल में फँसते ही जल उन्हें अकेला छोड़कर आगे बह जाता है।

3) सज्जन और विद्वान के संपत्ति संचय का क्या उद्देश्य होता है?

उत्तर- सज्जन और विद्वान संपत्ति का अर्जन दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। उनका धन हमेशा दूसरों की भलाई में खर्च होता है।

4) रहीम ने कार मास के बादलों को कैसा बताया है?

उत्तर- रहीम ने कार महीने के बादलों को थोथा यानी बेकार गरजने वाला बताया है।

* लघु उत्तरीय प्रश्न

1) वृक्ष और सरोवर किस प्रकार दूसरों की भलाई करते हैं?

उत्तर- वृक्ष और सरोवर अपने द्वारा संचित वस्तु का स्वयं उपयोग नहीं करते हैं, यानी वृक्ष असंख्य फल उत्पन्न करता है लेकिन वह स्वयं उसका उपयोग नहीं करता। वह फल दूसरों के लिए देते हैं। ठीक इसी प्रकार सरोवर भी अपना जल स्वयं न पीकर उसे समाज की भलाई के लिए संचित करता है।

2) रहीम मनुष्य को धरती से क्या सीख देना चाहता है?

उत्तर- रहीम मनुष्य को धरती से सीख देना चाहता है कि जैसे धरती सरदी, गरमी व बरसात सभी ऋतुओं को समान रूप से सहती है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने जीवन में सुख-दुख को सहने की क्षमता होनी चाहिए।

3) रहीम ने क्लार के बादलों की तुलना किससे और क्यों की है?

उत्तर- रहीम ने क्लार के बादलों की तुलना उन लोगों से की है जो अमीरी से निर्धन हो चुके हैं। निर्धन लोग जब उन दिनों की बात करते हैं, जब वे धनी तथा सुखी थी, तो उनकी बातें पूर्णतः क्लार के बादलों की खोखली गरज जैसी होती है। क्लार बादल गरजते भर हैं, कभी बरसते नहीं, उसी प्रकार धनी लोग निर्धन होकर अपनी अमीरी की बातें करते हैं।

* दीर्घ उत्तर प्रश्न

1) रहीम के दोहों से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर- रहीम के दोहों से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने मित्र का सुख-दुख में बराबर साथ देना चाहिए। हमारे मन में परोपकार की भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार प्रकृति हमारे लिए सदैव परोपकार करती है, उसी प्रकार हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। रहीम वृक्ष और सरोवर की ही तरह संचित धन को जन कल्याण में खर्च करने की सीख देते हैं। अंतिम दोहे में रहीम हमें सीख देने का प्रयास करते हैं, कि धरती की तरह जीवन में सुख-दुख को समान रूप से सहन करने की शक्ति रखनी चाहिए।

व्याकरण

हिंदी में विराम चिह्न बहुत महत्वपूर्ण है विराम चिह्न का उपयोग लिखनेके समय उपयोग किया जाता है यह वाक्य के प्रकार और उसके स्थान के बारे में भी जानकारी देता है। विराम चिह्न वाक्य के अनुसार बदलते हैं।

दुसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि भाषा में स्थान -विशेष पर रुकने अथवा उतार - चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें ही ' विराम चिन्ह ' कहते हैं !

- 1) पूर्ण विराम (|) (Full Stop)
- 2) अल्प विराम (,) (Comma)
- 3) अर्ध विराम (;) (Semicolon)

- 4) प्रश्नवाचक चिन्ह (?) (Question Mark)
- 5) विस्मयादिवाचक चिन्ह (!) (Exclamation Mark)
- 6) निर्देशक (—) (Dash)
- 7) योजक (-) (Hyphen)
- 8) उद्धरण चिन्ह (" ") (Quotation Mark)
- 9) विवरण चिन्ह (:-) (Sign of Following)

लेखन- विभाग रहीम पर अनुच्छेद

अबदुर्रहीम खानखाना का जन्म संवत् १६१३ (ई. सन् १५५६) में लाहौर में हुआ था। संयोग से उस समय हुमायूँ, सिकंदर, सूरी का आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए सैन्य के साथ लाहौर में मौजूद थे। रहीम के पिता बैरम खाँ तेरह वर्षीय अकबर के शिक्षक तथा अभिभावक थे। बैरम खाँ खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित थे। वे हुमायूँ के साढ़ू और अंतरंग मित्र थे। रहीम की माँ वर्तमान हरियाणा प्रांत के मेवाती राजपूत जमाल खाँ की सुंदर एवं गुणवती कन्या सुल्ताना बेगम थी। जब रहीम पाँच वर्ष के ही थे, तब गुजरात के पाटण नगर में सन १५६१ में इनके पिता बैरम खाँ की हत्या कर दी गई। रहीम का पालन-पोषण अकबर ने अपने धर्म-पुत्र की तरह किया। शाही खानदान की परंपरानुरूप रहीम को 'मिर्जा खाँ' का खिताब दिया गया। रहीम ने बाबा जंबूर की देख-रेख में गहन अध्ययन किया। शिक्षा समाप्त होने पर अकबर ने अपनी धाय की बेटी माहबानो से रहीम का विवाह करा दिया। इसके बाद रहीम ने गुजरात, कुम्भलनेर, उदयपुर आदि युद्धों में विजय प्राप्त की। इस पर अकबर ने अपने समय की सर्वोच्च उपाधि 'मीरअर्ज' से रहीम को विभूषित किया। सन १५८४ में अकबर ने रहीम को खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित किया। रहीम का देहांत ७१ वर्ष की आयु में सन १६२७ में हुआ। रहीम को उनकी इच्छा के अनुसार दिल्ली में ही उनकी पत्नी के मकबरे के पास ही दफना दिया गया। यह मज़ार आज भी दिल्ली में मौजूद हैं। रहीम ने स्वयं ही अपने जीवनकाल में इसका निर्माण करवाया था। हुमायूँ ने युवराज अकबर की शिक्षा-दिक्षा के लिए बैरम खाँ को चुना और अपने जीवन के अंतिम दिनों में राज्य का प्रबंध की जिम्मेदारी देकर अकबर का अभिभावक नियुक्त किया था। बैरम खाँ ने कुशल नीति से अकबर के राज्य को मजबूत बनाने में पूरा सहयोग दिया। किसी कारणवश बैरम खाँ और अकबर के बीच मतभेद हो गया। अकबर ने बैरम खाँ के विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया और अपने उस्ताद की मान एवं लाज रखते हुए उसे हज पर जाने की इच्छा जताई। परिणामस्वरूप बैरम खाँ हज के लिए रवाना हो गये। बैरम खाँ हज के लिए जाते हुए गुजरात के पाटन में ठहरे और पाटन के प्रसिद्ध सहस्रलिंग सरोवर में नौका-विहार के बाद तट पर बैठे थे कि भेंट करने की नियत से एक अफगान सरदार मुबारक खाँ आया और धोखे से बैरम खाँ की हत्या कर दी। यह मुबारक खाँ ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए किया। इस घटना ने बैरम खाँ के परिवार को अनाथ बना दिया। इन धोखेबाजों ने सिर्फ कत्ल ही नहीं किया, बल्कि काफी लूटपाट भी

मचाया। विधवा सुल्ताना बेगम अपने कुछ सेवकों सहित बचकर अहमदाबाद आ गई। अकबर को घटना के बारे में जैसे ही मालूम हुआ, उन्होंने सुल्ताना बेगम को दरबार वापस आने का संदेश भेज दिया। रास्ते में संदेश पाकर बेगम अकबर के दरबार में आ गई। ऐसे समय में अकबर ने अपने महानता का सबूत देते हुए इनको बड़ी उदारता से शरण दिया और रहीम के लिए कहा "इसे सब प्रकार से प्रसन्न रखो। इसे यह पता न चले कि इनके पिता खान खानों का साया सर से उठ गया है। बाबा जम्बूर को कहा यह हमारा बेटा है। इसे हमारी दृष्टि के सामने रखा करो। इस प्रकार अकबर ने रहीम का पालन-पोषण एकदम धर्म-पुत्र की भांति किया। कुछ दिनों के पश्चात अकबर ने विधवा सुल्ताना बेगम से विवाह कर लिया।

* गतिविधि- संत कबीर का चित्र बनाओ।

संत कबीर



पाठ 12 कंचा

* पाठ का सार

प्रसतुत कहानी में लेखक ने बाल मनोविज्ञान का सहज, सुंदर वर्णन किया है। अप्पू नामक बच्चा किस प्रकार कंचे की जार के ओर आकर्षित होता है, और अपने स्कूल के फीस के पैसे भी नहीं देता।

* शब्दार्थ

सियार- गीदड़

केद्रित- टिका हुआ

बुद्धू- मूर्ख

जार- शीशे का पात्र

निषेध- मना करना

कर्मठ- कर्मशील

बायलर- पानी उबालने का यंत्र

शंका- संदेह

* अतिलघु प्रश्न

1 वह अकेला ही क्यों खेला करता था?

उ- अप्पू की एक बहन थी जिसकी मृत्यु के बाद वह अकेला खेला करता था।

2 मास्टर जी की सफलता किस बात में है?

उ- लड़के का जवाब उसके मन से बाहर ले आना।

* लघु प्रश्न

1 अप्पू को कुछ भी दिखाई या सुनाई क्यों नहीं दे रहा था?

उ- अप्पू को कुछ भी दिखाई सुनाई इसलिए नहीं दे रहा था, क्योंकि वह पूरी तरह मजेदार कहानी के खयालों में था।

2 अप्पू का ध्यान किस ओर आकृष्ट हुआ था?

उ -अप्पू का ध्यान कंचों के लिए जार की ओर आकृष्ट हुआ।

3 अप्पू ने जिस तरह कंचे खरीदे क्या आप उसे सही मानते हो?

उ- अप्पू ने अपने फीस के पैसे रू कंचे खरीदे थे। हम इसे सही नहीं मानते हैं, माता- पिता हम पर भरोसा करते हैं। कंचे खरीदने के लिए उसे माता -पिता को बताकर उनसे पैसे लेने चाहिए थे।

4 कंचा कहानी हमें क्या शिक्षा देती है?

उ- कंचा नामक कहानी बाल मनोविज्ञान का वर्णन करती है। व्यक्ति को अपनी पसंद के अनुसार काम करते हुए अपने काम पर ध्यान देना चाहिए।

* दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) कहानी में अप्पू ने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?

उत्तर- जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचा खेले, उससे वह हार जाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंद मुट्टी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंद मुट्टी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है। अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा। अप्पू की इस सोच के पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने से उसे हार का सामना नहीं करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्ज के अतिरिक्त किसी को खेलने नहीं देगा।

व्याकरण

* लिंग की परिभाषा

“संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की नर या मादा जाति का बोध हो, उसे

व्याकरण में 'लिंग' कहते हैं।”

दूसरे शब्दों में - संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

जैसे-

पुरुष जाति - बैल, बकरा, मोर, मोहन, लड़का आदि।

स्त्री जाति - गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लड़की आदि।

'लिंग' संस्कृत भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'चिह्न' या 'निशान'। चिह्न या निशान किसी संज्ञा का ही होता है। 'संज्ञा' किसी वस्तु के नाम को कहते हैं और वस्तु या तो पुरुषजाति की होगी या स्त्रीजाति की। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक संज्ञा या तो पुल्लिंग होगी या स्त्रीलिंग।

* पुल्लिंग

जिन संज्ञा के शब्दों से पुरुष जाति का पता चलता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

जैसे - पिता, राजा, घोडा, कुत्ता, आदमी, सेठ, मकान, लोहा, चश्मा, खटमल, फूल, नाटक, पर्वत, पेड़, मुर्गा, बैल, भाई, शिव, हनुमान, शेर आदि।

* स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

जैसे - हंसिनी, लडकी, बकरी, माता, रानी, जूँ, सुई, गर्दन, लज्जा, नदी, शाखा, मुर्गी, गाय, बहन, यमुना, बुआ, लक्ष्मी, गंगा, नारी, झाँपड़ी, लोमड़ी आदि।

स्त्रीलिंग के अपवाद

जैसे - जनवरी, मई, जुलाई, मक्खी, ज्वार, अरहर, मूँग, चाय, लस्सी, चटनी, इ, ई, ऋ, जीभ, आँख, नाक, सभा, कक्षा, संतान, प्रथम, तिथि, छाया, खटास, मिठास, आदि।

लेखन-विभाग

* मेरा बचपन पर निबंध

बचपन जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण समय होता है बचपन में इतनी चंचलता और मिठास भरी होती है कि हर कोई फिर से बचपन को जीना चाहता है बचपन में वह धीरे-धीरे चलना, गिर पड़ना और फिर से उठकर दौड़ लगाना बहुत याद आता है बचपन में पिताजी के कंधे पर बैठकर मेला देखने का जो मजा होता था वह अब नहीं आता है बचपन में मिट्टी में खेलना और मिट्टी से छोटे-छोटे खिलौने बनाना किसकी यादों में नहीं बसा है। बचपन में जब कोई डांटता था तो मां के आंचल में जाकर छुप जाते थे बचपन में मां की लोरियां सुनकर नींद आ जाती थी लेकिन अब वह सुकून भरी नींद नसीब नहीं होती है बचपन के वो सुनहरे दिन जब हम खेलते रहते थे तो पता ही नहीं चलता कब दिन होता और कब रात हो जाती थी।

बचपन में किसी के बाग में जाकर फल और बैर तोड़ जाते थे तब वहां का माली पीछे भागता था वह दिन किसको याद नहीं आते शायद इसीलिए बचपन जीवन का सबसे अनमोल पल है मेरा बचपन सपनों का घर था जहां मैं रोज दादा-दादी के कहानी सुनकर उन कहानियों में ऐसे खो जाता था मानो उन कहानियों का असली पात्र मैं ही हूं बचपन के वह दोस्त जिनके साथ रोज सुबह-शाम खेलते, गांव की गलियों के चक्कर काटते और खेतों में जाकर पंछी उड़ते। मेरा बचपन गांव में ही बीता है इसलिए मुझे बचपन की और भी ज्यादा याद आती है बचपन में हम भैंस के ऊपर बैठकर खेत चले जाते थे तो बकरी के बच्चों के पीछे दौड़ लगाते थे बचपन में सावन का महीना आने पर हम पेड़ पर झूला डाल कर झूला झूलते थे और ठंडी ठंडी हवा का आनंद लेते थे। बचपन में मैं और मेरे दोस्त गर्मियों की छुट्टियों में बागों में बैर तोड़ने चले जाते थे खट्टे मीठे बेर हमें बहुत पसंद थे जिस कारण हम अपने आप को रोक नहीं पाते थे बागों के माली लकड़ी लेकर हमें मारने को दौड़ते लेकिन हम तेजी से दौड़ कर घर में छुप जाते थे।

हमारे घर के बाहर एक बड़ा चौक था जहां पर गांव के सभी बड़े बुजुर्ग शाम को बैठते थे और गांव और देश की चर्चा करते थे हम भी वहां पर खेलते रहते थे कभी-कभी हमें बुजुर्गों से शिक्षाप्रद कहानियां सुनने को भी मिलती थी। चौक में हर साल कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता था जिसमें एक छोटी मटकी को माखन से भरकर ऊपर लटका दिया जाता था फिर हम बच्चे और हमारे से बड़े लोग मिलकर छोटी मटकी को फोड़ते थे यह उत्सव इतना अच्छा होता था कि हम पूरी रात गाना गाते और नाचते रहते थे कृष्ण जन्मोत्सव के दिन मुझे आज भी मेरा बचपन याद आ जाता है। बचपन में हमारे घर में गाय, भैंस और बकरियां होती थी जिनकी छोटे बच्चों के साथ हम बहुत खेलते थे हमारे घर में एक शेरू नाम का कुत्ता भी था जिसे हम बहुत प्यार करते थे वह भी हमारा को ख्याल रखता था।

वह दिन मुझे आज भी बहुत याद आता है क्योंकि मैं रास्ता भूल जाने के कारण बहुत रोने लगा था मेरा बचपन बहुत ही अच्छा रहा है बचपन में मैंने खूब

मस्तियां की है जिनकी मीठी यादें आज भी मेरे मस्तिक में बची हुई है आज शहर की इस गुमनाम जिंदगी में भी रस तब घुल आता है जब मैं छोटे बच्चों को खेलते हैं और शैतानियां करते देखता हूं।

* गतिविधि- कंचे का अथवा अप्पू का चित्र बनाओ।



बाल महाभारत पाठ 21 -25

प्रश्न-1 राजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से क्या कहा?

उत्तर- राजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से कहा "बृहन्नला, मुझे बचाओ इस संकट से" मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँगा।"

प्रश्न-2 दुर्योधन को कैसे पता चला कि पांडव मत्स्य देश में छिपे हैं?

उत्तर- हस्तिनापुर में कीचक के मारे जाने की खबर से दुर्योधन ने अनुमान लगाया कि पांडव मत्स्य देश में ही छिपे हैं और हो-न-हो कीचक का वध भीम ने ही किया होगा।

प्रश्न-3 सुशर्मा कौन थे और वह दुर्योधन का साथ क्यों देना चाहते थे?

उत्तर- सुशर्मा त्रिगर्त देश के राजा थे। वह दुर्योधन का साथ इसलिए देना चाहते थे क्योंकि मत्स्य देश के राजा विराट उसके शत्रु थे और इस अवसर का लाभ उठाकर वह उससे अपना पुराना बैर चुकाना चाहते थे।

प्रश्न-4 शंख की ध्वनि को सुनकर द्रोण ने क्या शंका व्यक्त की?

उत्तर- द्रोण ने कहा- "मालूम होता है, यह तो अर्जुन ही आया है।"

प्रश्न-5 दुर्योधन ने पितामह भीष्म को संधि के संबंध में क्या कहा?

उत्तर- दुर्योधन ने कहा
पूज्य पितामह, " मैं संधि नहीं चाहता हूँ। राज्य तो दूर रहा, मैं तो एक गाँव तक पांडवों को देने के लिए तैयार नहीं हूँ।"

प्रश्न-6 किसने किससे कहा?

"कर्ण! मूर्खता की बातें न करो। हम सबको एक साथ मिलकर अर्जुन का मुकाबला करना होगा।"

कृपाचार्य ने कर्ण से कहा।

प्रश्न-7 राजकुमार उत्तर को अर्जुन से कंक के बारे में क्या मालूम हो चुका था?

उत्तर- राजकुमार उत्तर को अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-8 राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को क्या भ्रम हुआ?

उत्तर- राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को भ्रम हुआ कि विख्यात कौरव-वीरों को उनके बेटे ने अकेले ही लड़कर जीत लिया।

प्रश्न-9 कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर क्यों चकित रह गया?

उत्तर कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर चकित रह गया क्योंकि उसे अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-10 भीष्म ने युधिष्ठिर के संधि प्रस्ताव को सुनकर क्या सलाह दी?

उत्तर - भीष्म ने सलाह दी कि पांडवों को उनका राज्य वापस देना ही न्यायोचित होगा।

प्रश्न-11 संधि प्रस्ताव के विषय में अंत में धृतराष्ट्र ने क्या निश्चय किया?

उत्तर- सारे संसार की भलाई को ध्यान में रखकर धृतराष्ट्र ने अपनी तरफ से संजय को दूत बनाकर पांडवों के पास भेजने का निश्चय किया।

प्रश्न-12 युधिष्ठिर ने संजय द्वारा धृतराष्ट्र को क्या संदेश भेजा?

उत्तर- युधिष्ठिर ने संजय द्वारा धृतराष्ट्र को संदेश भेजा कि "कम-से-कम हमें पाँच गाँव ही दे दें। हम पाँचों भाई इसी से संतोष कर लेंगे और संधि करने को तैयार होंगे।"

पाठ 13 एक तिनका

* कविता का सार

प्रस्तुत कविता में कवि ने कभी भी घमंड नहीं करने की सलाह दी है क्योंकि घमंडी का घमंड एक न एक दिन टूट ही जाता है।

* शब्दार्थ

घमंड -अहंकार

ऐंठ- अकड़

मुंडेर- छत का किनारा

झिझक- हिचकिचाना

ढब- तरीका

* अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1) कवि छत की मुंडेर पर किस भाव में खड़ा था?

उत्तर- कवि छत की मुंडेर पर घमंड से भरे हुए भाव में खड़ा था।

2) कवि की बेचैनी का क्या कारण था?

उत्तर- कवि की आँख में तिनका गिर जाने के कारण वह बेचैन हो गया और उसकी आँख लाल हो गई व दुखने लगी।

3) आस-पास के लोगों ने क्या उपहास किया?

उत्तर- आस-पास के लोग कपड़े की नोक से कवि की आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगे।

* लघु उत्तरीय प्रश्न

1) तिनके से कवि की क्या हालत हो गई?

उत्तर- एक तिनके ने कवि को बेचैन कर दिया था। वह तड़प उठा। थोड़ी देर में उसकी आँखें लाल हो गईं और दुखने लगीं। कवि की सारी ऐंठ और अहंकार गायब हो गया।

2) तिनकेवाली घटना से कवि को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर- तिनकेवाली घटना से कवि समझ गया कि मनुष्य को कभी घमंड नहीं करना

चाहिए। एक तिनके ने हमें बेचैन कर दिया। और हमारी औकात बता दिया, उन्हें यह बात भी समझ में आ गई कि उन्हें परेशान करने के लिए एक तिनका ही काफी है। अतः उसे किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए।

* दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- इस कविता से यह प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य को कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। एक तिनका कवि के आँख में जाने के बाद उनका घमंड चूर-चूर हो गया। अतः अपने उपलब्धि पर अहंकार आ जाना सही नहीं है। हमें सदैव घमंड करने से बचना चाहिए।

2) आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी की क्या दशा हुई?

उ- तिनका पड़ने के बाद घमंडी की दशा खराब हो गई। तिनके की चुभन से वह बेचैन हो गया। दर्द के कारण वह अपनी आँख रगड़ने लगा। उसकी आँख लाल हो गई। एक तिनके के आगे वह विवश हो गया।

3) हमें घमंड क्यों नहीं करना चाहिए?

उ- हमें घमंड नहीं करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने घमंड में अकड़ा रहता है तो उसकी अकड़ तोड़ने के लिए एक तिनका ही काफी होता है।

व्याकरण

* प्रत्यय-

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते हैं।

दूसरे अर्थ में - शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय दो शब्दों से मिलकर बना होता है - प्रति + अय। प्रति का अर्थ होता है 'साथ में, पर बाद में' और अय का अर्थ होता है 'चलने वाला'। **अतः प्रत्यय का अर्थ होता है,** साथ में पर बाद में चलने वाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते हैं।

प्रत्यय का अपना अर्थ नहीं होता और न ही इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व होता है। प्रत्यय अविकारी शब्दांश होते हैं जो शब्दों के बाद में जोड़े जाते हैं।

जैसे -

समाज + इक = सामाजिक

सुगन्ध + इत = सुगन्धित

भूलना + अक्कड़ = भुलक्कड़

मीठा + आस = मिठास

भला + आई = भलाई

प्रत्यय	धातु	कृदंत-रूप
आऊ	टिक	टिकाऊ

प्रत्यय	धातु	कृदंत-रूप
आक	तैर	तैराक
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भागोड़ा

लेखन-विभाग सूचना-पत्र

* आप शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली की छात्रा खुशी मेहरा हैं। विद्यालय में आपका परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस विषय पर 20-से-30 शब्दों में सूचना लिखें।

सूचना

शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली

दिनांक - 24/07/2019

परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो जाना

सभी को यह सूचित किया जाता है कि 22/07/2019 को विद्यालय के खेल परिसर में मेरा परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस पर मेरी फोटो के साथ मेरा अनुक्रमांक 2367528 है। यदि यह किसी को भी मिले तो मुझे लौटाने की कृपा करें।

खुशी मेहरा

कक्षा- 7

* गतिविधि- कविता का चित्र बनाओ।

पाठ 14 खानपान की बदलती तस्वरें

* शब्दार्थ

मिश्रित- मिली-जुली

सकारात्मक - अच्छा

बदलाव- परिवर्तन

कामकाजी- काम करने वाली

विधियाँ- ढंग

सुयोग- अच्छा अवसर

तबादला- बदली

अचरज-आश्चर्य

विस्तार- फैलाव

आम- सामान्य

* अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1) उत्तर भारत में किस बात में बदलाव आया है?

उत्तर- उत्तर भारत में खान-पान की संस्कृति में बदलाव आया है।

2) आजकल बड़े शहरों में किसका प्रचलन बढ़ गया है?

उत्तर- आजकल बड़े शहरों में फ़ास्ट फूड चाइनीज नूडल्स, बर्गर, पीजा तेज़ी से बढ़ा है।

3) स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में क्या फ़र्क आया है? इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर- स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में कमी आई है जिससे लोगों का आकर्षण कम हुआ है। इसका कारण है उन वस्तुओं में मिलावट किया जाना, जिनसे तैयार की जाती है।

4) मथुरा-आगरा के कौन-से व्यंजन प्रसिद्ध रहे हैं?

उत्तर- मथुरा के पेड़े और आगरा का दलमोट-पेठा प्रसिद्ध है।

* लघु उत्तरीय प्रश्न

1) स्थानीय व्यंजनों के प्रसार को प्रश्रय कैसे मिली?

उत्तर- आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों, तबादलों "स्थानांतरण" के कारण लोगों का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने से मिश्रित व्यंजन संस्कृति का विकास हुआ। उसके कारण भी खानपान की चीजें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं।

2) खानपान संस्कृति का "राष्ट्रीय एकता" में क्या योगदान है?

उत्तर- खानपान संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान है। खाने-पीने के व्यंजनों का प्रभाव एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में बढ़ता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण व दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित

हैं। इससे लोगों के मेलजोल भी बढ़ता जा रहा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

3) स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार क्यों ज़रूरी है?

उत्तर- स्थानीय व्यंजन किसी न किसी स्थान विशेष से जुड़े हैं। वे हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। उनसे हमारी पसंद, रुचि और पहचान होती है। इसलिए भारतीय व्यंजनों का पुनरुद्धार आवश्यक है क्योंकि पश्चिमी प्रभाव के कारण अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। अतः इनको पुनः प्रचलित करने की आवश्यकता है।

* दीर्घ प्रश्न

1) खानपान की नई संस्कृति का नकारात्मक पहलू क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखक का कहना है कि मिश्रित संस्कृति से व्यंजन का अलग और वास्तविक स्वाद का मज़ा हम नहीं ले पाते हैं। सब गड्डमड्ड हो जाता है। कई बार खानपान की नवीन मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीजों का सही स्वाद लेने से भी वंचित रह जाते हैं, क्योंकि हर चीज़ खाने का एक अपना तरीका और उसका अलग स्वाद होता है। प्रायः सहभोज या पार्टीयों में हम विभिन्न तरीके के व्यंजन प्लेट में परोस लेते हैं ऐसे में हम किसी एक व्यंजन का सही मज़ा नहीं ले पाते हैं। स्थानीय व्यंजन हमसे दूर होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान नहीं है और पुरानी पीढ़ी भी धीरे-धीरे इसे भुलाती जा रही है। यह खानपान की नवीन संस्कृति के नकारात्मक पक्ष हैं।

व्याकरण

किसी भी वाक्य को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के क्रम को वर्तनी या अक्षरी कहते हैं। वाक्य भाषा की महत्वपूर्ण इकाई होता है लिखने या बोलने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ लिखा या कहा जाए, वह बिल्कुल स्पष्ट सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।	हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।
सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं।	सीता ने गीत की दो-चार कड़ियाँ गायीं।
पतिव्रता नारी को छूने का उत्साह कौन करेगा।	पतिव्रता नारी को छूने का साहस कौन करेगा।
कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है।	कृषि हमारी व्यवस्था का आधार है।

प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है।

प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है।

मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।

मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।

कुत्ता रेंकता है।

कुत्ता भौंकता है।

मुझे सफल होने की निराशा है।

मुझे सफल होने की आशा नहीं है।

लेखन विभाग पत्र-लेखन

*** मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र।**

परीक्षा भवन,

अ. ब. स.

20-जून-2020

प्रिय मित्र दीपक,

सदा सुखी रहो।

मैं कुशल-मंगल हूँ और आशा करता हूँ कि वहाँ पर भी सभी कुशल-मंगल होंगे। काफी समय हो गया था न तो तुमसे बात हो पाई और न ही तुम्हारे घर पर किसी से बात कर पाया।

तुम्हारे पिता को फोन किया, तो उनसे ज्ञात हुआ की तुम बोर्ड परीक्षा में मुरादाबाद जिले में प्रथम आये हो। इस समाचार को सुनकर मन खुशी से भर गया। मुझे तो पहले से ही विश्वास था की तुम प्रथम श्रेणी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होंगे लेकिन यह जानकार की तुमने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ जिले में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया है, मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। इस परीक्षा के लिए तुम्हारे परिश्रम और नियमितता ने ही वास्तव में उँचाई तक पहुँचाया है। मुझे पूरी आशा थी की तुम्हारा परिश्रम रंग दिखायेगा और मेरा अनुमान सच साबित हुआ। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया की दृढ संकल्प और कठिन परिश्रम से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।

मैं सदैव यह कामना करूँगा की तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इस प्रकार मेहनत करते रहो और सभी को प्रसन्नता प्रदान करते रहो।

तुम्हारा मित्र

आकाश

*** गतिविधि- अपने मनपसंद खाने का चित्र बनाओ।**

